नाम:- प्रो. भूपेंद्र कुमार दुबे

महाविद्यालय:- दुर्गा महाविद्यालय,रायपुर

संकाय: - कला संकाय

पदनाम: - सहायक प्राध्यापक

विभाग:- भूगोल विभाग

विषय:- भूगोल

शीर्षक:- "आधुनिक भारत में भूगोल का विकास"

(Development of Geography in modern india)

Edit with WPS Office

आधुनिक भारत में भूगोल का विकास

(Development of Geography in modern india)

प्रस्तावना:-

भारत में भूगोल **1920 में** स्नातक स्तर के भूगोल विभाग, **लाहौर (पाकिस्तान) से** प्रारंभ हुआ| आधुनिक भूगोल की जन्म भूमि जर्मनी से यह प्रारंभ लगभग एक शताब्दी बाद तथा अन्य यूरोपीय देशों एवं उत्तरी अमेरिका से आदि शताब्दी से भी बाद का है|ब्रिटिश उपनिवेश होने के कारण यह औपनिवेशिक भूगोल तत्कालीन ब्रिटिश भूगोल का आंशिक प्रसार था| लेकिन यह प्रभाव गहरा तथा दूरगामी रहा|प्रारंभिक भारतीय भूगोलवेत्ताओं ने किसी न किसी ब्रिटेन के विश्वविद्यालय से भूगोल की शिक्षा दीक्षा ली थी|भारत में स्वतंत्रता से पूर्व भूगोल की प्रगति मंद रही लेकिन **1950 के बाद** उसमें उत्थान की लहर आई तथा विश्वविद्यालय में भूगोल विभाग, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि तथा अनुसंधान कार्यों एवं प्रकाशन में अचानक प्रसार हुआ**(Dayal ,1994)|** मध्य 1980 के दशक तक के प्रारंभिक 35 वर्षों में यह प्रगति नियमित रही लेकिन उसके बाद पहले स्थिरता तथा **1990** के दशक में शिथिलता आई है|

स्वतंत्रता से पूर्व औपनिवेशिक काल में भारतीय भूगोल की प्रगति

(Progress of Indian Geography in Pre- Independence Colonial Period)

लाहौर के बाद अलीगढ़(1924) तथा पटना (1927) में स्नातक स्तरीय भूगोल विभाग स्थापित हुए| भूगोल में स्नातकोत्तर स्तर का शिक्षण सबसे पहले अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय(AMU) में 1931 में प्रारंभ हुआ| 1950 तक सहित कुल आठ विश्वविद्यालय:-कोलकाता ,इलाहाबाद ,बनारस ,आगरा ,पंजाब ,चंडीगढ़ ,मद्रास तथा पटना में स्नातकोत्तर स्तरीय भौगोलिक अध्ययन प्रारंभ हुए(Chatterjee:- 1964)|यह 1940 के दशक में स्थापित हुए|

इन प्रारंभिक विभागों में **अधिकांश प्रोफेसर लंदन विश्वविद्यालय** के पी.एच.डी रिसर्च डिग्री धारक थे|आई.आर.खान (अलीगढ़)एस.पी. चटर्जी (कोलकाता) एच .एल. छिब्बर(बनारस)जॉर्ज कुरियन(मद्रास) एस.सी.चैटर्जी (पटना)एस .एम .अली (सागर मध्य प्रदेश)जी.एस .गोसल , विसकनसीन विश्वविद्यालय से पी .एच.डी (चंडीगढ़)तथा आर. एन. दुबे पेरिस विश्वविद्यालय से पी.एच.डी .(इलाहाबाद) एसे बिल्कुल प्रारंभिक भूगोल विभाग संस्थापक थे| यह भूगोलवेता लंदन विश्व विद्यालय की उच्च स्तरीय भौगोलिक अध्ययन एवं अनुसंधान परंपरा को उपयुक्त भारतीय विश्वविद्यालयो में स्थापित कर सके| इनके अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र, प्रादेशिक भूगोल ,ऐतिहासिक भूगोल, आर्थिक भूगोल तथा चिकित्सा भूगोल थे| इन भौगोलिक अध्ययनों की परंपरा के लिए उनके विभाग जाने जाते थे |एस.पी. चटर्जी का भारत का भोताकृतिक प्रदेशीकरण आज भी सर्वाधिक स्वीकृत है| एस. एम. अली के भारत का पुराणों का भूगोल को विशेष ख्याति प्राप्त हुई |यह ऐतिहासिक भूगोल की उत्कृष्ट रचना है| आर. एन. दुबे की आर्थिक एवं व्यापारिक भूगोल में रुचि थी तथा जॉर्ज कुरियन ने प्रादेशिक भूगोल तथा चिकित्सा भूगोल में प्रसिद्धि प्राप्त की|

Edit with WPS Office

औपनिवेशिक भारत में भौगोलिक अनुसंधान

(Geographical Research in Colonial India)

स्वतंत्रता पूर्व भारतीय भूगोल के विषय एवं अनुसंधान रुचि की झलक इंडियन साइंस कांग्रेस संगठन के 1963 में" **भारत में विज्ञान की प्रगति"** के 50 वर्षों (1910 - 1960)का पुनरावलोकन" भारत में विज्ञान के 50 वर्ष "से प्राप्त होती है इसमें भूगोल की प्रगति का भी अवलोकन किया गया था |भारत में इस काल में प्रकाशित हुए भूगोल के लगभग 1400रिसर्च पत्रों तथा कुछ पुस्तकों का रिव्यू 9 उपभागों में प्रस्तुत किया गया था| इन प्रकाशनों में सबसे अधिक संख्या(लगभग 1200) उन रिसर्च पत्रों की थी जो **भौतिक भूगोल ,आर्थिक भूगोल और मानव भूगोल के क्षेत्र में थे|**

1.भौतिक भूगोल के उप विभागों मैं भू आकृति विज्ञान ,जलवायु विज्ञान ,मृदा विज्ञान, जल विज्ञान और जैव भूगोल थे |भू आकृति विज्ञान में सबसे अधिक अनुसंधान भारत क भूवैज्ञानिक संरचना ,स्थलाकृति और दृश्य भूमि निर्माण से संबंधित थे| हिमनदो के अध्ययन में विशेष कार्य ज्योग्राफिकल सोसायटी द्वारा संगठित 1960 के अन्वेषण से गैंगस्टैंग हिमनद के क्षेत्र में किया गया था। मृदा भूगोल के क्षेत्र में सिंधु में सिंधु गंगा मैदान के नदी बेसिनों की, डेल्टाओं की, राजस्थान की और हिमालय क्षेत्रों की मिट्टियों पर लगभग 30शोधपत्र प्रकाशित हुए थे। जलवायु संबंधी शोधपत्रों में प्राय: ऋतुओं और कृषि की फसलों के संबंध को विचारा गया था।

2. आर्थिक भूगोल के उप विषयों पर लगभग 300शोधपत्र प्रकाशित हुए थे, जिनमें से अधिकतर कृषि भूगोल, सिंचाई, औद्योगिक भूगोल और दामोदर घाटी के उद्योगों पर थे। (1) कृषि भूगोल में विशेषता भूमि उपयोग, तथा चावल, गेहूं, गन्ना और कपास आदि फसलों पर थे |(2) सिंचाई साधनों पर प्रकाशित कुछ शोध पत्रों में पंजाब और हरियाणा की नेहरो का अध्ययन था |(,3) औद्योगिक भूगोल में मुख्ता कोयला जल विद्युत उत्पादन ,लोहा उद्योग, वस्त्र उद्योग और परिवहन का अध्ययन किया गया था|(4) दामोदर घाटी के उद्योग बिहार एवं उड़ीसा में खनन उद्योग और महाराष्ट्र के वस्त्र उद्योग का अच्छा अध्ययन प्रकाशित किया गया था |

मानव भूगोल के उपभागों में लगभग 350 शोध पत्र प्रकाशित हुए थे ,जो अधिकतर नगरी भूगोल ,ग्राम प्रतिरूप, प्रवजन जनसंख्या घनत्व ,जनजातीय और मानव पारिस्थितिकी पर थे| इन शोध पत्रों में नगरीय भूगोल पर प्रकाशित लिखो की संख्या सबसे अधिक थी |

स्वतंत्र भारत मे भूगोल की प्रगति

(Progress of Geography in independent India)

स्वतंत्रता ने भारत में सभी कार्य क्षेत्र के साथ विज्ञान में भी प्रगति की दिशाएं उत्पन्न कर दी तथा भूगोल में भी तीव्र प्रगति हुई| यह प्रगति भौगोलिक अध्ययन संस्थाओं:- विश्वविद्यालय, संस्थान

Edit with WPS Office

कॉलेज तथा स्कूलों की संख्या में वृद्धि ,;भूगोल के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में वृद्धि, अध्ययन क्षेत्र के प्रसार ;भौगोलिक पाठ्य सामग्री के प्रकाशन के प्रसार तथा अनुसंधान के विभिन्न संघटको सोसायटी,संगठन, सम्मेलन जर्नल्स का प्रकाशन तथा रिसर्च डिग्री एम. फिल. तथा पी . एच . डी. कार्यक्रमों में अभूतपूर्व वृद्धि के रूप में हुई।

[,1] संस्थागत प्रगति institutional progress :-

भूगोल अध्ययन एवं अनुसंधान की संस्थाओं - विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग ;भूगोल से संबंधित संस्थान, जैसे राष्ट्रीय दूर संवेदन एजेंसी ,हैदराबाद ;कॉलेज - भूगोल विभाग तथा स्कूल स्तरीय भूगोल शिक्षण में स्वतंत्रता के बाद भारी प्रसार हुआ।

(अ) विश्वविद्यालय में भूगोल विभाग (University department of geography):-

भारत में केंद्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालय में भूगोल विभागों की बड़ी संख्या में वृद्धि हुई। फिर भी जिन्होंने अपनी पहचान बनाई है। उनमें अलीगढ़ ,कोलकाता, मद्रास, बनारस, जेएनयू नई दिल्ली, डी.यू दिल्ली, जामिया नई दिल्ली, चंडीगढ़, कुरुक्षेत्र ,पुणे, गोरखपुर, सागर, रोहतक ,जयपुर, मुंबई, हैदराबाद प्रमुख है। रांची, मैसूर ,जोधपुर, शिलांग, भुवनेश्वर, नैनीताल, गढ़वाल, विश्वविद्यालयो के नाम भी उल्लेखनीय है ।

(ब) भूगोल संबंधी संस्थान (institute associated with geography):-

भौगोलिक अध्ययनों से संबंधित विशिष्ट संस्थाओं की स्थापना से भौगोलिक अध्ययनों एवं अनुसंधान में अभिवृद्धि हुई ।नेशनल एटलस तथा थेमेटिक मेपिंग ऑर्गेनाइजेशन कोलकाता 1956 ,सर्वे आफ इंडिया ,देहरादून 1767 भारतीय जनगणना ,नई दिल्ली राष्ट्रीय सुदूर संवेदन एजेंसी हैदराबाद, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, पुणे 1884 तथा नई दिल्ली योजना आयोग ,नई दिल्ली, नगर ग्राम योजना संस्थान नई दिल्ली, भारतीय संख्यिकी संस्थान नई दिल्ली, इंडियन काउंसलिंग आफ अप्लाइड इकोनामिक रिसर्च का मानचित्र अनुभाग ,नई दिल्ली 1959।

(स) कॉलेज -भूगोल (collegiate geography):- स्नातकोत्तर भूगोल विभाग के कुछ कॉलेज :- आगरा, ज्ञानपुर, नैनीताल, अलीगढ़, ग्वालियर, मेरठ, गाजियाबाद ,वाराणसी, बरेली, कानपुर ,रामपुर सहारनपुर, मुरादाबाद, देहरादून, ऋषिकेश,मुजफ्फरनगर, बिजनौर, नागपुर,खुर्जा, मुंबई, इंदौर, रीवा मथुरा,पौड़ी, पिथौरागढ़, जौनपुर,टीकमगढ़,बेलगाम,धरवाड़,बीजापुर,शिवपुरी ,हिसार अवस्थित है ।

Edit with WPS Office

(द) स्कूल -भूगोल (school geography):- उच्चतर भौगोलिक शिक्षण के साथ स्कूल स्तर पर भी भूगोल शिक्षण का प्रसार हुआ ।स्कूल स्तर पर भूगोल कॉलेज भूगोल से अधिक पूर्व का है।हाई स्कूल तथा इंटरमीडिएट स्तर के भूगोल का एक विषय के रूप में या सामाजिक विज्ञान के संघटक के रूप में विस्तार हुआ ।

[2] भूगोलवेत्ता(Geographers):-

प्रथम पीढ़ी के भूगोलवेत्ता यद्यपि संख्या में काम थे लेकिन व्यावसायिक भूगोलवेत्ता के रूप में अत्यधिक कुशल थे ।**द्वितीय पीढ़ी** के भूगोलवेत्ता, जिनकी संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई , उसी इस परंपरा के थे या उनमें से कुछ ब्रिटिश ,फ्रांसीसी ,अमेरिकी प्रसिद्ध भूगोलवेत्ताओं की देखरेख में डॉक्टोरल शोध कार्य करके भारत आए या उनमें से कुछ अमेरिकी विश्वविद्यालयो में चले गए । **तृतीय पीढ़ी** के कुछ प्रारंभिक भूगोलवेत्ताओं पूर्ववत ढंग से कार्यशैली अपनाने के कारण प्रसिद्ध हुए लेकिन धीरे-धीरे भूगोलवेत्ताओं में से कई अधिक प्रमुखता से अपनी पहचान नहीं बना पाए। ए. बी. मुखर्जी,रमेश दत्त दीक्षित , आर.सी.चादना ,गोपाल कृष्ण, सविंद्र सिंह,ओम प्रकाश सिंह,एजाजुद्दीन अहमद, माजिद हुसैन,जसवीर सिंह, सुदेश नाजिया, मेहंदी राजा, जगदीश सिंह, काशीनाथ सिंह, एस . एल.कायस्थ,के. सीता, आभा लक्ष्मी सिंह, एच. एन.मिश्रा,बालेश्वर ठाकुर, बी. एन.सिंह, के.एम .जाना, के. एम. कुलकर्णी , पी.एस. तिवारी, सी . पी.सिंह ,अंजना देसाई , वाई.जी .जोशी, इंद्रपाल ,एम.कुरैशी ,आर.सी चांदना ,रईस अख्तर, एम.के. बंदोपाध्याय , एम.एस. शर्मा, स्वर्णजीत मेहता, सूर्यकांत ,कल्पना मारकंडे ,हेमलता जोशी तथा आर.के राय के नाम भौगोलिक संसार में सुपरिचित है ।भारत जैसे विशाल देश में भूगोलवेत्ताओं की पूरी सूची नहीं बन सकती है ।

[3] भूगोल की विषय वस्तु में परिवर्तन एवं प्रसार प्रवृत्तियां

(Trends of Shift and expansion of the content of geography):-1950 के दशक में कुछ नए क्षेत्र जुड़ गए:- प्रादेशिक भूगोल, प्रदेशीकरण तथा प्रादेशिक नियोजन ,कृषि भूगोल (पी .दयाल ,मोहम्मद सफी ,जसवीर सिंह)नगरीय भूगोल तथा नगर नियोजन (आर.एल.सिंह)सामाजिक भूगोल में अनुसूचित जाति तथा जनजाति अध्ययन (एजाजुद्दीन अहमद, सामाजिक भूगोल)ग्रामीण आवास भूगोल; यातायात तथा विपणन (Marketing)भूगोल;जनसंख्या भूगोल (जी.एस .गोसाल तथा चंडीगढ़ भूगोल विभाग);राजनीतिक भूगोल(रमेश दत्त दीक्षित ,रोहतक ; सी.पी.सिंह दिल्ली)|

Edit with WPS Office

स्वतंत्रता के पहले दो दशकों में भूगोल की विषय वस्तु **Indian counsil of social science research (ICSSR)New Delhi द्वारा भूगोल में 1968 तक हुए अनुसंधान का सर्वेक्षण Survey of Research in Geography ,1968 से ज्ञात होता है ।**यह सर्वेक्षण प्रकाश राव,(दिल्ली)की अध्यक्षता में तथा 10 अग्रणीय भूगोलवेत्ताओं ,जो भूगोल के अलग-अलग क्षेत्र में कार्यरत थे उनका प्रतिनिधित्व करते थे, ने किया था ।उन्होंने भारतीय भूगोल की विषय वस्तु को निम्न क्रम में प्रस्तुत किया:-

(अ) आर्थिक भूगोल(कृषि, भूउपयोग ,संसाधन, यातायात, विपणन ,वन ,उद्योग)

(ब) नियोजन भूगोल(नगर, प्रादेशिक ,नदी घाटी नियोजन)

(स) ऐतिहासिक भूगोल

(द) मानव भूगोल (जनसंख्या, नगरीय ,ग्रामीण, चिकित्सा भूगोल)

(इ) राजनीतिक भूगोल

(ई) प्रादेशिक भूगोल ,भौगोलिक अनुसंधान विधियां (हवाई फोटो चित्रो की व्याख्या, गणितीय विधियां एवं प्रशिक्षण)।

1972 तक भारतीय भूगोल की विषय वस्तु भूगोल के प्रमुख क्षेत्र तथा विषयों की रूपरेखा इस रिपोर्ट से स्पष्ट होती है -

(अ) आर्थिक भूगोल, 1968 के समान पूर्ववत रहा

(ब) सामाजिक भूगोल (नए विषय - धर्म ,भाषा ,बोलियां ,सामाजिक रूपांतरण, सामाजिक भूगोल में मात्रात्मक क्रांति

(स) ऐतिहासिक तथा राजनीतिक भूगोल को एक ही भाग में प्रस्तुत कर दिया गया तथा इसमें अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विषय को भी सम्मिलित किया गया

(द) जनसंख्या एवं अधिवास भूगोल अधिक विशिष्ट नाम दे दिया गया तथा 1968 के मानव भूगोल के खंड के लिए प्रयोग किया गया ।

(इ) प्रादेशिक भूगोल में प्रदेशों एवं उनके नियोजन के विषय थे ।

1975 के भौगोलिक अनुसंधान सर्वेक्षण में भूगोल के प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार पाए गए थे:- कृषि भूगोल, नगरीय भूगोल ,सामाजिक- सांस्कृतिक भूगोल, भू आकृति विज्ञान ,औद्योगिक भूगोल, प्रादेशिक भूगोल एवं नियोजन, जनसंख्या भूगोल,विपणन भूगोल ,पर्यावरण एवं विकास,ग्रामीण

Edit with WPS Office

बस्ती भूगोल,प्राकृतिक संसाधन, ग्रामीण विकास, राजनीतिक भूगोल ,सामाजिक भूगोल ,नगर नियोजन, अन्य विषयों में जलवायु विज्ञान, जल विज्ञान, समुद्र विज्ञान ,व्यापार - परिवहन,ऐतिहासिक तथा जैव भूगोल प्रमुख थे।

1990 के दशक के अंतर्गत अनुसंधान विषयों में नवीनता NAGI के विभिन्न कमिशनों की सूची 1992 से ज्ञात होती है।1992 जयपुर कांग्रेस का मुख्य विषय :-"**हमारी प्राकृतिक धरोहर"-** संपोषणीय विकास के विशिष्ट संदर्भ में **(our natural Heritage with particular reference to sustainable development)** होने के कारण पर्यावरण पर अधिक ध्यान था- राजनीति तथा पर्यावरण, पर्वत पर्यावरण, मरुस्थल पारिस्थितिकी ,प्राकृतिक आपदाएं ,संपोषणीय विकास ,भारत का सांस्कृतिक भूगोल ,GIS ,जेंडर भूगोल ,जनसंख्या तथा विकास ,चिकित्सा भूगोल ,भूगोल तथा शिक्षा, अर्थ विकास का भूगोल ,ग्रामीण रूपांतरण ,कृषि जलवायु प्रदेश ,नगरी पारिस्थितिकी ,कृषि - तंत्र विपणन भूगोल तथा कृषि में ऊर्जा उपयोग पर **NAGI (national association of Geographers, India) के कमिश्नर कार्यरत थे।**

[4] भौगोलिक अनुसंधान में वर्तमान प्रवृत्तियां(current trends in geographical research):- 21वीं शताब्दी के प्रथम दशक में भारतीय भूगोल में अनुसंधान के विषयों एवं सरोकार के संकेतक NAGI के वार्षिक सम्मेलनों के प्रधान विषयों से भी व्यक्त होते हैं। सन 2000 के नागपुर सम्मेलन(**NBSS and LUP - नेशनल ब्यूरो ऑफ सोशल सर्वे एंड लैंड उसे प्लानिंग)** का विषय था- **संपोषणीय विकास** के लिए भूमि उपयोग नियोजन तथा प्रबंधन ,अगले सम्मेलन का विषय : केंद्रीय आकृति नियोजन, पर्यावरण तथा विकास, 2002**(दरभंगा):प्राकृतिक हजार्ड प्रबंधन, 2004** (**रोहतक**): **प्रादेशिक विकास -** विजन 2002 - 2005 (बेंगलुरु); भारत का नगरी भविष्य; 2006 का पहला अंतर्राष्ट्रीय भारतीय भूगोल कांग्रेस हैदराबाद: **विकास, पर्यावरण** तथा जियोइनफॉर्मेटिक्स; 2007 (**उदयपुर)- विकास तथा संसाधन प्रबंध** तथा 30 वे कांग्रेस(2010) का विषय पृथ्वी ग्रह उत्तर जीवित के लिए रूपरेखा।इन पर ध्यान देने से बिल्कुल स्पष्ट है की सबसे बड़ा ध्यान केंद्र **पर्यावरण** के विविध पहलू तथा दूसरा **विकास** था।

Edit with WPS Office